Regd. with Registrar of News Papers of India of PUN BIL 2002/07848: Postal Reg.No.GDP-41/2023-2025

मासिक अन्सारुल्लाह क़ादियान

मजिल्स अन्सारुल्लाह भारत का तर्जुमान

जनवरी/2024 ई

MONTHLY QADIAN

ANSARULLAH

Magazine of Majlis Ansarullah Bharat

Jan / 2024

Date of Publication:15-01-2024

Chairman: Ataul Mujeeb Lone | Editor: Hafiz Syed Rasool Niyaz, Mob: 9876332272 | Manager: Tahir Ahmad Beig, Mob: 9915223313

Annual Subscription: Rs: 250/- | Per Issue: Rs: 25/- | Weight: 50-100 grams/Issue

तिरुचि जैल अधिकारी को जमाआती लिटरेचर भेंट करते हुए श्री रफ़ीक़ अहमद मद्रासी साहिब मुबल्लिग़ सिलसिला तमिलनाडु ।

बिहार के सरकारी मंत्री श्री तेज प्रताप यादव एवं श्री लालू प्रसाद यादव के सुपुत्र को जमाआती लिटरेचर भेंट करते हुए श्री महमूद शाह नाज़िम पटना ।

19-11-2023 को आयोजित वार्षिक इज्तिमा मज्लिस अंसारुल्लाह ईस्ट सिंह भूम (झारखण्ड) के मौक़ा पर म्यूजिकल चेयर मुक़ाबिले का एक दृश्य ।

10-12-2023 को धदेवाली (ज़िला गुरदासपुर, पंजाब) में आयोजित मेडिकल कैंप का एक दृश्य, श्री डॉक्टर सय्यद सईद अहमद साहिब मौजूद हैं।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

یٰۤاَیُّہَا الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا کُوۡنُوۡۤا اَنۡصَارَ اللّٰہِ
سورۃ الصّف آیت ۱۵

मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत का प्रवक्ता

मासिक पत्रिका

अन्सारुल्लाह

क़ादियान

Volume - 22 | जनवरी 2024 | Issue -01

निगरान
अताउल मुजीब लोन

सम्पादक
सय्यद रसूल नियाज़

उप-सम्पादक (हिन्दी)
डाक्टर अब्दुल माजिद
09915279005

मैनेजर
ताहिर अहमद बेग
Ph. +91 99152 23313

प्रेस
फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस
क़ादियान

वार्षिक मूल्य : 250 ₹
विदेश : 50 अमरीकी डॉलर

प्रकाशन स्थान
ऐवाने अन्सार, भारत
क़ादियान - 143516
ज़िला : गुरदासपुर, पंजाब
फोन : 01872-220186
फैक्स : 01872-224186

विषय सुचि	पृष्ठ
दर्सुल क़ुर्आन	2
दर्सुल हदीस	2
हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दिव्य उपदेश	3
सम्पादकीय : नववर्ष तथा आत्म स्वमूल्यांकन के महत्वपूर्ण प्रश्न	4
निवेदन - सदर मज्लिस अंसारुल्लाह भारत मुवाज़ना मजालिस की रिपोर्ट भेजने के समय में परिवर्तन	6
लेख : कुरआन और हदीस की रोशनी में नए साल का स्वागत और हमारी ज़िम्मेदारियां	8

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Ansarullah Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Ansarullah Bharat, P.o. Qadian, Distt. Gurdaspur 143516 Punjab India. Editor Syed Rasool Niyaz

قرآن کریم दर्सुल क़ुर्आन

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَلْتَنْظُرْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ لِغَدٍ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ (الحشر ۱۹)

अनुवाद: हे वे लोगों जो ईमान लाए हो! अल्लाह का तक़्वा धारण करो और हर कोई यह नज़र रखे कि वह कल के लिए क्या आगे भेज रहा है। और अल्लाह का तक़्वा धारण करो। निस्संदेह, अल्लाह जो कुछ तुम करते हो उसकी ख़बर रखता है।

दर्सुल हदीस

عَنِ النَّبِيِّ صلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ (اَلْكَيِّسُ مَنْ دَانَ نَفْسَهُ وَعَمِلَ لِمَا بَعْدَ الْمَوْتِ وَالْعَاجِزُ مَنْ أَتْبَعَ نَفْسَهُ هَوَاهَا وَتَمَنَّى عَلَى اللهِ) قَالَ هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ قَالَ وَمَعْنَى قَوْلِهِ (مَنْ دَانَ نَفْسَهُ) يَقُولُ حَاسَبَ نَفْسَهُ فِي الدُّنْيَا قَبْلَ أَنْ يُحَاسَبَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ۔

(سنن الترمذی کتاب صفة القیامة والرقائق والورع عن رسول اللہ منہ)

अनुवाद - पवित्र पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फरमाते हैं कि اَلْكَيِّسُ مَنْ دَانَ نَفْسَهُ सच्चा बुद्धिमान व्यक्ति वह है जो स्वमूल्यांकन रखता है और मृत्यु के बाद के जीवन को ध्यान में रखते हुए अच्छे कर्म करता रहता है। وَالعَاجِزُ: और वह व्यक्ति नकारा और असहाय है जो अपनी इच्छाओं का पालन करता है और अल्लाह से आशा रखता है।

★ ★ ★

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दिव्य उपदेश

कृपा और दया के निशान दिखाना सदा से ख़ुदा का स्वभाव है, परन्तु तुम इस स्वभाव के भागीदार तभी बन सकते हो जब तुम में और उसमें कुछ भी दूरी न रहे। तुम्हारी इच्छा उसकी इच्छा, तुम्हारी आकांक्षाएं उसकी आकांक्षाएं हो जाएँ और तुम हर समय, हर स्थिति, सफलता या विफलता में उसकी चौखट पर नतमस्तक रहो ताकि वह जो चाहे करे। यदि तुम ऐसा करोगे तो तुम में वह ख़ुदा प्रकट होगा, जिसने एक लम्बे समय से अपना चेहरा छुपा लिया है। क्या तुम में कोई है जो इस पर अमल करे और उसकी प्रसन्नता की कामना करे और उसकी नियति पर क्षुब्ध न हो। अत: तुम संकट को देखकर क़दम और भी आगे बढ़ाओ कि यह तुम्हारी उन्नति का साधन है। एकेश्वरवाद को समस्त संसार में फैलाने के लिए अपनी सम्पूर्ण शक्ति से प्रयासरत रहो और उसकी प्रजा पर दया करो। उन पर अपनी वाणी, अपने हाथ या अन्य किसी प्रकार से अत्याचार न करो, प्रजा की भलाई हेतु प्रयत्नशील रहो, किसी पर अभिमान न करो भले ही वह तुम्हारे अधीन हो, किसी को गाली मत दो भले ही वह गाली देता हो, सदाचारी, दीन और स्वच्छ हृदय वाले बन जाओ। प्रजा के साथ सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करो ताकि स्वीकार किए जाओ। बहुत हैं जो शालीनता प्रकट करते हैं परन्तु अन्दर से भेड़िए हैं, बहुत हैं जो ऊपर से स्वच्छ हैं परन्तु अन्दर से सांप हैं। अत: तुम ख़ुदा के समक्ष स्वीकार्य नहीं हो सकते जब तक अन्दर और बाहर समान न हो। बड़े होकर छोटों पर दया करो न कि उनका अपमान, ज्ञानी होकर अज्ञानियों को भलाई का पाठ पढ़ाओ न कि स्वयं को श्रेष्ठ समझकर उनका अनादर, धनवान होकर निर्धन की सेवा करो न कि स्वयं श्रेष्ठ बनकर उन पर अभिमान। विनाश के मार्गों से भयभीत रहो, ख़ुदा से डरते रहो, शालीनता एवं सदाचार का अनुसरण करो, मानव की उपासना न करो, केवल अपने ख़ुदा के लिए त्याग करो, संसार से हृदय मत लगाओ, ख़ुदा के हो जाओ, उसी के लिए जीवन व्यतीत करो, उसके लिए प्रत्येक अपवित्रता और पाप से घृणा करो क्योंकि वह पवित्र है। हर सुबह तुम्हारे लिए साक्ष्य दे कि तुम ने ख़ुदा में लीन रहते हुए रात्रि व्यतीत की। हर शाम तुम्हारे लिए साक्ष्य दे कि तुम ने डरते-डरते दिन व्यतीत किया। संसार के अभिशापों और फटकारों से मत डरो कि वे धुंए की भांति देखते-देखते लुप्त हो जाती हैं। वे दिन को रात में परिवर्तित नहीं कर सकतीं। तुम ख़ुदा के अभिशाप से डरो जो आकाश से आता है और जिस पर गिरता है उसकी लोक व परलोक दोनों स्थानों पर जड़ काट देता है। तुम आडम्बर से स्वयं को सुरक्षित नहीं रख सकते क्योंकि तुम्हारे ख़ुदा की दृष्टि तुम्हारे पाताल तक है। क्या तुम उसको धोखा दे सकते हो। अत: तुम सीधे और स्वच्छ हो जाओ, पवित्र और निष्कपट हो जाओ। यदि तुम्हारे अन्दर थोड़ा सा भी अन्धकार विद्यमान है तो वह तुम्हारे सम्पूर्ण प्रकाश को नष्ट कर देगा।

★ ★ ★

सम्पादकीय

"नववर्ष तथा आत्म स्वमूल्यांकन के महत्वपूर्ण प्रश्न"

आम तौर पर दुनिया में अंग्रेज़ी (ग्रेगोरियन) कैलेंडर का व्यापक रूप से उपयोग किए जाने के कारण हर कोई इसको समझता है। यह वर्ष 1 जनवरी से शुरू होता है और 31 दिसंबर को समाप्त होता है। इस अवसर पर समस्त अहमदियों को स्वमूल्यांकन के लिए महत्वपूर्ण प्रश्नों की ओर ध्यान दिलाते हुए हज़रत खलीफ़तुल मसीह अलखामिस फरमाते हैं: अत: अगर हम साल की आखिरी रात और नए साल की शुरुआत समीक्षा और प्रार्थना के साथ करें, तो हम अपना मरणोत्तर जीवन बेहतर करने वाले लोग होंगे और अगर हम भी नये साल की शुरुआत बाहरी शुभकामनाओं और सांसारिक बातों से करते हैं, तो हमने बहुत कुछ खोया है और कुछ भी नहीं पाया या बहुत कम पाया है। यदि कमज़ोरियाँ बनी रहती हैं और हमारी समीक्षा हमें सांत्वना नहीं देती है, तो हमें प्रार्थना करनी चाहिए कि हमारा आने वाला वर्ष पिछले वर्ष की तरह आध्यात्मिक कमज़ोरी का वर्ष न हो। बल्कि हमारा हर कदम अल्लाह तआला की ख़ुशी हासिल करने की दिशा में एक कदम होना चाहिए। हमारा हर दिन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदर्शों पर चलने वाला दिन हो। हमारे दिन और रात हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के प्रति अपनी बैअत का वादा निभाने के लिए प्रेरित करें। ★वह वादा जो हमसे पूछता है कि क्या हमने शिर्क न करने के वचन को पूरा किया है। यह बुतों और सूर्य और चंद्रमा की पूजा करने का शिर्क नहीं है, बल्कि पवित्र पैगंबर के कथन के अनुसार, यह अमल में पाखंड और दिखावा का शिर्क है। वह शिर्क जो छिपी हुई इच्छाओं को पूरा करने का शिर्क है। (मुसनद अहमद बिन हन्बल, खंड 4, पृष्ठ 800-801, हदीस महमूद बिन लबीद, हदीस संख्या 24036, आलमुल किताब, बेरूत, 1998) ★हमारी प्रार्थनाएँ, हमारे रोज़े, हमारा दान, हमारा वित्तीय बलिदान, लोगों के प्रति हमारी सेवा, जमाअत के काम के लिए हमारा समय देना, ख़ुशी हासिल करने के बजाय अल्लाह के अलावा किसी और को खुश करने या दुनिया को दिखावा करने के लिए तो नहीं था। अल्लाह तआला के सामने हमारे दिल की छुपी ख्वाहिशें तो आ खड़ी नहीं हुई थीं। ★ फिर इसके बाद यह सवाल है कि क्या हमारा वर्ष पूरी तरह से झूठ से मुक्त हो गया है और पूर्ण सत्य पर कायम है?। फिर ये सवाल है क्या हमने अपने आप को ऐसे आयोजनों से दूर रखा है जिनके कारण हृदय में अशुद्ध विचार उत्पन्न हो सकते हैं? यानी आज के युग में टीवी है, इंटरनेट है। हमें खुद से यह सवाल पूछना है कि क्या हमने खुद को सभी अत्याचार से बचाया है। यानी हमने अपने आप को अन्याय करने से बचा रखा है। फिर सवाल यह है कि क्या हमने अपने आप को हर तरह के विश्वासघात से पवित्र रखा है। फिर हमें पूछना होगा कि क्या हमने हर तरह के भ्रष्टाचार से बचने की कोशिश की है? प्रश्न यह है कि क्या हम हर प्रकार के विद्रोही आचरण से परहेज़ करते हैं? फिर सवाल यह है कि क्या हम पांच नमाज़ो के लिए प्रतिबद्ध हैं। फिर हमें यह पूछना होगा कि क्या हमारा ध्यान तहज्जुद की नमाज़ अदा करने की ओर है। फिर यह प्रश्न है कि क्या हम आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दारूद भेजने के लिए नियमित प्रयास कर रहे हैं ? फिर सवाल यह है कि क्या हमने अल्लाह की स्तुति करने पर ध्यान दिया, जैसा कि पवित्र पैगंबर (PBUH) ने कहा है कि अल्लाह की स्तुति के बिना शुरू किया गया काम अधूरा और अप्रभावी होगा। तो फिर सवाल यह है कि क्या हम खुद को और दूसरों को किसी भी तरह का कष्ट पहुंचाने से बच रहे हैं? क्या हमारे हाथ और हमारी ज़बान दूसरों को चोट पहुँचाने से बच रहे हैं? क्या हम क्षमा और माफ करने से काम ले रहे हैं? क्या विनम्रता और अनिच्छा ही हमारी विशिष्टता रही है? सुख, दुख, संकट और आराम की हर स्थिति में, हम सर्वशक्तिमान ख़ुदा के प्रति वफादार रहे हैं। अल्लाह की ओर से कभी कोई संदेह नहीं हुआ कि मेरी प्रार्थनाएँ क्यों स्वीकार नहीं की गईं या मुझे कष्ट क्यों दिया गया। यदि यह शंका है तो कोई भी मनुष्य आस्तिक नहीं रह सकता। अगला प्रश्न यह है कि क्या हमने सभी प्रकार के कर्मकाण्डों तथा गप्पों से पूर्णत: बचने का प्रयास किया है? फिर सवाल यह है कि क्या हम पवित्र कुरान और पवित्र पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आदेशों और निर्देशों को पूरी तरह से अपनाने की कोशिश कर रहे हैं। इसे छोड़ने की कोशिश करना शिर्क के बाद सबसे बड़ी बात है और अहंकार है। अहंकार। ★ सवाल यह है कि क्या हमने ख़ुशी के उच्च मानक हासिल करने की कोशिश की है? क्या हमने नम्रता और नर्मी को अपनाने का प्रयास किया है? फिर सवाल यह है कि क्या हर दिन हमारे अंदर धर्म विकसित हो रहा है और अपना सम्मान और महानता स्थापित कर रहा है? दुनिया के सामने धर्म को आगे रखने का वादा, जिसे हम अक्सर दोहराते हैं, सिर्फ एक खोखला वादा नहीं है। सवाल यह है कि क्या हमने इस्लाम के प्रति प्रेम को इस हद तक बढ़ाने की कोशिश

की है कि हम इसे अपनी संपत्ति से अधिक प्राथमिकता देते हैं, अपने सम्मान को प्राथमिकता देते हैं? और उसे अपने बच्चों से भी अधिक प्रिय और ज़रूरी मानते थे। फिर यह है कि क्या हम सर्वशक्तिमान ख़ुदा की सृष्टि से सहानुभूति रखने में आगे बढ़ने की कोशिश कर रहे हैं? फिर सवाल यह है क्या वे दुआ करते रहे और अपने बच्चों को बताते रहे कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के प्रति आज्ञाकारिता का मानक हमेशा हमारे अंदर बना रहना चाहिए। हम सदैव आपकी बात मानें। उच्च मानकों के साथ और इसमें आगे बढ़ना जारी रखें। फिर सवाल यह है कि क्या हमने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के प्रति भाईचारे और आज्ञाकारिता के रिश्ते को इस हद तक बढ़ा दिया है कि अन्य सभी सांसारिक रिश्ते उसके सामने छोटे पड़ जाएं। फिर सवाल यह है कि क्या हम खिलाफत अहमदिया के प्रति वफादारी और आज्ञाकारिता के रिश्ते को जारी रखने और बढ़ने के लिए प्रार्थना करते रहे? क्या अपने बच्चों को खिलाफत अहमदिया से जुड़े रहने और वफादार रहने पर ध्यान देते रहे और उनके लिए यह ध्यान विकसित करने के लिए प्रार्थना करते रहे? सवाल यह है कि क्या खलीफा वक़्त और जमाअत के लिए नियमित रूप से प्रार्थना करते रहे?। (ख़ुत्बा जुमा : 30 दिसंबर 2016ई०)

दुआ है कि अल्लाह तआला हमें अपने आप को जांचने और इन सभी सवालों के अनुसार अपने अंदर सुधार करने की क्षमता प्रदान करे। आमीन।

(हाफ़िज़ सय्यद रसूल नियाज़)

INDIAN AUTO
हर प्रकार की मोटर गाड़ियों के पार्टस सस्ते रेट पर खरीदें।
P. Ali Koya
CALICUT (KERALA)

"शिक्षा प्राप्त करना हर मुस्लिम पुरुष एवं स्त्री का कर्त्तव्य है"
MUSTAFA BOOK CO
All kinds of Academic Book of Kerala Board, CBSE, ISCS & Universities
Fort Road
KANNUR-1 (KERALA)
Mobile : 09895655426

SONET SOLUTIONS
PRIVATE LIMITED
No.41, II Cross, Doctors Layout,
Kasturi Nagar,
BANGALORE - 560043
तालिबे दुआ :
MUSADDIQ AHMAD
Mobile : 098451-98560
Tel : +91 (80) 41636612
Web : www.sonetsolutions.in

निवेदन सदर-ए-मज्लिस

मुवाज़ना मजालिस की रिपोर्ट भेजने के समय में परिवर्तन

अताउल मुजीब लोन, सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मुवाज़ना मजालिस के लिए मुक़र्ररा अरसा रिपोर्ट में तबदीली फ़रमाई है। इस तबदीली को समस्त नाज़िमीन और ज़ोमा किराम को दृष्टिगत रखना होगा। इस से पहले पिछले साल का माह-ए-जुलाई से इस साल का माह-ए-जून तक मुवाज़ना मजालिस के लिए अरसा रिपोर्ट मुक़र्रर था। अब जनवरी से दिसंबर एक साल का पूरा अरसा रिपोर्ट के लिए मुक़र्रर किया गया है ।

माह-ए-जुलाई से माह-ए-जून तक अरसा रिपोर्ट होने की वजह से अगर गुज़श्ता साल के नाज़िम या ज़ईम की तरफ़ से कुछ कमी रह जाती थी तो इस का नुक़्सान रवां साल के नाज़िम या ज़ईम की कारकर्दगी को प्रभावित करता था।

लेकिन अब ऐसा नहीं होगा चूँकि नाज़िम या ज़ईम मज्लिस की पूरे साल की कारकर्दगी की रिपोर्टें मुवाज़ना में पेश हुआ करेंगी। इस लिहाज़ से मौजूदा नाज़िम या ज़ईम चाहे पुराने हों या नए दोनों को बेहतर रंग में मेहनत करके रज़ाए इलाही के साथ-साथ मुवाज़ना मजालिस में इनाम भी हासिल कर सकते हैं।

यूं तो हमारा असल मक़सद नेकियों में आगे बढ़ने की रूह पैदा करना है। जैसा कि अल्लाह तआला क़ुरआन मजीद में फ़रमाता है।

وَلِكُلٍّ وِّجْهَةٌ هُوَ مُوَلِّيْهَا فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرٰتِ ۚ اَيْنَ مَا تَكُوْنُوْا يَاْتِ بِكُمُ اللّٰهُ جَمِيْعًا ۚ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ (अलबक़रा :149) यानी और हर एक के लिए एक दृष्टिकोण है जिसकी तरफ़ वो मुँह फेरता है। पस नेकियों में एक दूसरे से आगे बढ़ जाओ। तुम जहां कहीं भी होगे अल्लाह तुम्हें इकट्ठा करके ले आएगा। यक़ीनन अल्लाह हर चीज़ पर जिसे वह चाहे दाइमी क़ुदरत रखता है।

इस आयत में इन्सान की ज़ाती और जमाती और क़ौमी ज़िंदगी में तरक़्क़ी का रहनुमा उसूल बयान हुआ है और वह हर नेकी और अच्छाई के मैदान में दूसरों से आगे बढ़ने की नसीहत और अमल है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं:

"नेकियों में बढ़ना चाहिए एक ही मुक़ाम पर ठहर जाना कोई अच्छी सिफ़त नहीं है। देखो ठहरा हुआ पानी आख़िर गंदा हो जाता है। कीचड़ की सोहबत की वजह से बदबूदार और बदमज़ा हो जाता है। चलता पानी हमेशा उम्दा, सुथरा और मज़े-दार होता है। अगरचे इस में भी नीचे कीचड़ हो। मगर कीचड़ इस पर कुछ असर नहीं

कर सकता। यही हाल इन्सान का है कि एक ही मुक़ाम पर ठहर नहीं जाना चाहिए। यह हालत ख़तरनाक है। हर वक़त क़दम आगे ही रखना चाहिए। नेकी में तरक़्क़ी करनी चाहिए। वर्ना ख़ुदा तआला इन्सान की मदद नहीं करता और इस तरह से इन्सान बे-नूर हो जाता है। जिसका नतीजा आख़िर-ए-कार बाज़-औक़ात इर्तिदाद (दीन से मुख फेर लेना) हो जाता है। इस तरह से इन्सान दिल का अंधा हो जाता है। ख़ुदा तआला की नुसरत उन्ही के साथ होती है जो हमेशा नेकी में आगे ही आगे क़दम रखते हैं एक जगह नहीं ठहर जाते और वही हैं जिनका अंजाम बख़ैर होता है।"(मलफ़ूज़ात खंड पंचम सफ़ा 456)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं "अल्लाह तआला फ़रमाता है कि एक मोमिन का काम हर किस्म की नेकियों में आगे बढ़ना है। अत: हमें इन बातों की तलाश भी करनी पड़ेगी जिनको ख़ुदा तआला ने ख़ैरात और नेकियों में शुमार फ़रमाया है क्योंकि हमारा दावा है कि हमने उस ज़माने के इमाम को मान कर हर किस्म की नेकियों में आगे बढ़ना है और जो तरक़्क़ी हमें ख़ुदा तआला और उस के बंदों के हुक़ूक़ अदा करने से रोकती है, जो तरक़्क़ी हमें दीन के हक़ अदा करने से रोकती है वो तरक़्क़ी हमें ख़ुदा तआला और इस के बंदों के हुक़ूक़ अदा करने से रोकती है, जो तरक़्क़ी हमें दीन के हक़ अदा करने से रोकती है वो तरक़्क़ी नहीं बल्कि जहालत है।"

(इख़ततामी ख़िताब बर्मोका सालाना इजतिमाआत ख़ुद्दामुल अहमदिया जर्मनी व बरतानिया 2011ई०)

तमाम नाज़िमीन व ज़ोमा किराम माह-ए-जनवरी से ही लाहे-ए-अमल के अनुसार प्रोग्राम करवाएं। अल्लाह हमें इस की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन

(अताउल मुजीब लोन)
सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत

Mobile : 9572858090, 9955553631

NEW MOBILE POINT
TABASSUM FANCY STORE

Mosabi Market No. 3, East Singhbhum
JHARKHAND Pin - 832104

Mob: 9008510546

Akmal Tailor
Hill Road, Madikeri - 571201

Pants, Shirts & All Gents Wears Stitching Here

कुरआन और हदीस की रोशनी में नए साल का स्वागत और हमारी ज़िम्मेदारियां

मुहम्मद इब्राहिम सरवर, मुरब्बी-ए-सिलसिला
उप संपादक पत्रिका अंसारुल्लाह क़ादियान

दुनिया के सभी सभ्य देशों के हर त्यौहार में कोई न कोई सीख और संदेश होता है। लेकिन जैसे-जैसे दुनिया आगे बढ़ती गई। मनुष्य ने संस्कृति और कला के नाम पर नए उत्सव और त्योहारों की रचना की। इन्हीं में से एक है नए साल का जश्न मनाने और उसकी मुबारकबाद देने का गैर-इस्लामिक तरीका।

दिन और रात के चक्र की तरह समय भी एक सतत प्रवाह है जो बिना रुके आगे बढ़ता रहता है और अलग-अलग पैमानों पर मापा जाता है। सेकंड, मिनट से लेकर बढ़ते दिन, हफ्ते, महीने और साल तक। पैमाना बदलता और रुकता नहीं है, बल्कि सदियों तक पहुंचता है और फिर उनकी गिनती अलग है। हिंदुओं के साल अलग होते हैं, मुसलमानों के साल अलग होते हैं और फिर अलग-अलग सभ्यताओं और राष्ट्रीयताओं के साल और महीने अलग होते हैं।

इस लेख में हम वर्तमान ईसवी कैलेंडर के अनुसार नए साल के बारे में बात कर रहे हैं। दरअसल, यह नए साल का जश्न ईसाइयों की देन है, क्योंकि उनकी मान्यता के अनुसार 25 दिसंबर को ईसा मसीह का जन्म दिन यानी क्रिसमस डे माना जाता है। जिसके कारण दुनिया भर में इस त्योहार का जश्न साल के आगमन तक जारी रहता है।

तथाकथित नये साल का जश्न:

इस संबंध में विश्व के अधिकांश देशों में एक-दूसरे को सभ्य दिखाने के लिए देश और शहरों की सभी प्रतिष्ठित और प्रसिद्ध इमारतों को रंग-बिरंगी रोशनी और विभिन्न समारोहों से सजाया जाता है, जिसे 31वीं रात (थर्टी फर्स्ट नाइट) कहा जाता है। आयोजन किया जाता है और 12 बजे एक-दूसरे को बधाई दी जाती है, केक काटा जाता है, हर जगह हैप्पी न्यू ईयर का शोर होता है, आतिशबाज़ी की जाती है और विभिन्न नाइट क्लबों में मनोरंजन कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। लोग विभिन्न स्थानों पर इकट्ठा होते हैं और 12 बजते ही रात में, वे खुशी के बिगुल बजाते हैं। वे एक-दूसरे को शराब पिलाते हैं और उपहार देते हैं। देर रात को बड़े पैमाने पर आतिशबाज़ी होती है। उनकी मान्यता के अनुसार, बुरी आत्माओं को दूर भगाकर नए साल की शुरुआत करना सबसे अच्छा है। और दूसरे शहरों और देशों की आतिशबाज़ी से आगे निकलने की कोशिश की जाती है ताकि अगले दिन और कई दिनों तक अखबारों और चैनलों पर खबरें प्रसारित होती रहें कि अमुक देश ने सबसे शानदार तरीके से जश्न मनाया।

सभी टीवी चैनलों का प्रसारण इसलिए किया जाता है ताकि लोग विशेषकर युवा नववर्ष के जश्न के नाम पर इस उत्सव में भाग लेकर नवीनता, स्वतंत्रता और स्वाधीनता को व्यक्त कर सकें। शहरों का ज़िक्र किया तो छोटे शहरों और कस्बों में भी तरह-तरह की पार्टियां होती हैं जिनमें शराब, शबाब और डांस का खूब दौर चलता है। और इस तरह गांवों और बस्तियों के युवा भी इन पार्टियों में शामिल हो जाते हैं। लड़कियां और महिलाएं भी इसमें भाग लेती है क्योंकि ऐसी पार्टियों में मनोरंजन केवल तीन चीजों से ही संभव है, पहला, शराब, दूसरा, महिलाएं, तीसरा, नाच-गाना। और अंतत: इसका परिणाम होता है यौन दुराचार।

नये साल की वास्तविकता :

एक कवि ने कहा है:

गाफिल तुझे घड़ियाल यह देता है मुनादी
गिरदों ने घड़ी उम्र की एक और घटा दी

अफसोस! बहुत अफ़सोस की बात है कि इस्लामी परंपराओं को भूलकर, हीनता और प्रशिक्षण की कमी के डर से पीड़ित होकर, कई मुसलमान ईसाइयों का अंधानुकरण कर रहे हैं और नए साल का इंतज़ार कर रहे हैं। और इसमें कोई संदेह नहीं है कि वे भी ऐसे गैर-इस्लामी बातों का हिस्सा हैं। पार्टियां बनाई जाती हैं वास्तविकता यह है कि यह इसाइयों की दिनांक प्रणाली है। मुसलमानों के पास अपनी कमरी इस्लामी दिनांक प्रणाली मौजूद है, जो नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हिजरत से जुड़ी है, जो मुहर्रमुल-हराम से शुरू होती है, यह इस्लामी कैलेंडर है; लेकिन दुर्भाग्य से हम में से ज्यादातर लोगों को इसके बारे में पता भी नहीं है।

हमें एक महत्वपूर्ण बात पर ध्यान देना चाहिए कि मुस्लिम नववर्ष जनवरी से नहीं होता। बल्कि इसकी शुरुआत मुहर्रम से होती है, जो हो चुका है और हम में से ज़्यादातर लोगों को इसकी जानकारी भी नहीं है। मुसलमानों को कमरी और हिजरी सन् की रक्षा करनी चाहिए। और हमारी युवा पीढ़ी और हमारे बच्चों को इस्लामी इतिहास और इस्लामी परंपराओं से शिक्षित करने की आवश्यकता है कि मुसलमानों ने अपना इतिहास इस्लाम के दूसरे खलीफा हज़रत उमर फारूक के खिलाफत के दौरान हज़रत अली की सलाह से हिजरत की घटना से निर्धारित किया था।

आज कई मुस्लिम देश और खुद अरब देश के पढ़े-लिखे मुस्लिम भी नए साल के आगमन का जश्न मनाते हैं। क्या वे नहीं जानते कि इस नए साल के आगमन पर उनकी जिंदगी का एक साल कम हो गया है, जिंदगी अल्लाह तआला की दी हुई सबसे अनमोल नेमत है और जब वह नेमत गायब हो जाती है या कम हो जाती है तो जश्न नहीं मनाया जाता बल्कि अफसोस किया जाता है। एक शायर ने कहा है कि:

इक और ईंट गिर गई दीवार-ए-हयात से
और लोग कह रहे हैं नया साल मुबारक

हमारी जिम्मेदारियाँ:

अल्हम्दुलिल्लाह। कितनी बड़ी बरकत है कि अल्लाह तआला ने हमें उम्मते मुस्लिमा में पैदा किया और ऊपर से अहमदिया जमाअत की बैअत करके हमें हज़रत खातमुन नबीय्यीन मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सच्चे प्रेमी और इस युग के इमाम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत कर के जमाअत अहमदिया के आध्यात्मिक प्रणाली से संबंधित हैं। और खिलाफत-ए-अहमदिया की आकाशीय मार्गदर्शन के कारण जमाअत के लोग दुनिया जहाँ की निरर्थक पार्टियों, नृत्यों, शोर-शराबे और रीति-रिवाजों और फिजूलखर्ची से दूर रहते हैं, बल्कि दूसरों के लिए एक पथ-प्रदर्शक भी बनते हैं। लेकिन कभी-कभी जानकारी की कमी और समाज के प्रभाव और प्रशिक्षण के अभाव में कुछ युवा और छात्र केक पार्टी, ग्रीटिंग कार्ड, गुलदस्ते और उपहार आदि देने में बुरा नहीं मानते। और उन्हें लगता है कि हम फिजूल की पार्टियों में शामिल नहीं होते हैं, इसलिए घर के अभिभावकों की जिम्मेदारी है कि वे उन्हें नए साल या खुशी के मौकों पर समझाएं।

इस्लामी दृष्टिकोण और शिक्षा क्या है और अहमदिया जमाअत की स्थिति क्या है?

नीचे हम अहमदिया खलीफा से प्राप्त मार्गदर्शन के साथ कुरआन और हदीस की रोशनी में इन दो प्रश्नों को हल करने का प्रयास करेंगे।

अल्लाह तआला मुस्लिम उम्मत को सभी गैर-इस्लामी रीति-रिवाजों और फिजूलखर्ची से रोकते हुए पवित्र कुरआन में एक सामान्य नियम बताता है: وَالَّذِيْنَ هُمْ عَنِ اللَّغْوِ مُعْرِضُوْنَ (अल-मोमिनुन:4) अर्थात सच्चे मोमिनों की एक विशेषता यह है कि वे हर तरह की बकवास यानी अर्थहीन और बेकार कार्यों और शब्दों से दूर रहते हैं। और रहना चाहिए ताकि वे सच्चे मोमिन कहलाने के अधिकारी बनें।

इस संबंध में, पवित्र कुरआन के अध्ययन से हमें जो प्रार्थना का करने का पता चलता है वह यह है: وَقُلْ رَّبِّ اَدْخِلْنِيْ مُدْخَلَ صِدْقٍ وَّاَخْرِجْنِيْ مُخْرَجَ صِدْقٍ وَّاجْعَلْ لِّيْ مِنْ لَّدُنْكَ سُلْطٰنًا نَّصِيْرًا (बनी इस्राइल: 81) "और तू कह हे मेरे ख़ुदा, मुझे इस प्रकार दाखिल कर कि मेरा दाखिल होना सच्चाई के साथ हो और मुझे इस प्रकार निकाल कि मेरा निकलना सच्चाई के साथ

हो और अपनी ओर से मेरे लिए ताकतवर मददगार अता कर।

नए साल की दुआ

एक रिवायत में जब नया महीना या नए साल का पहला महीना शुरू होता था, तो पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथी एक-दूसरे को यह दुआ सिखाते थे और बताते थे : اللّٰهُمَّ أَدْخِلْهُ عَلَيْنَا بِالأَمْنِ وَ الإِيْمَانِ، وَالسَّلَامَةِ وَالإِسْلَامِ، وَرِضْوَانٍ مِّنَ الرَّحْمٰنِ وَجِوَازٍ مِّنَ الشَّيْطَانِ यानी, हे अल्लाह, हमें इस नए साल में शांति, सुरक्षा, इस्लाम और अपनी स्वीकृति प्रदान करे शैतान से शरण के साथ दाखिल फर्मा।

नव वर्ष की बधाई:

हमारे प्यारे इमाम हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह खामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ नए साल (2019) की शुरुआत में जमाअत के लोगों को नसीहत करते हुए फरमाते हैं:

यह याद रखना चाहिए कि केवल औपचारिक बधाई देने का कोई मतलब नहीं है। न ही औपचारिक बधाई से अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्त होती है। वर्ष का सच्ची बधाई तो यह प्रतिज्ञा करना है कि अल्लाह ने हमें एक और वर्ष का सूरज दिखाया है, ताकि हम अपने भीतर की कमजोरियों और अंधकार को दूर करने का प्रयास करें। आइए हम प्रतिज्ञा करें कि हम पिछले वर्ष में हुई कमियों को दूर करेंगे। वे अपने आप में पहले से अधिक शुद्ध परिवर्तन लाने का प्रयास करेंगे, जिसके लिए हमने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत की है, इन चीज़ो को प्राप्त करने के लिए अपनी सभी क्षमताओं का उपयोग करने का प्रयास करेंगे, तो निश्चित रूप से यह वर्ष हमारे लिए शुभ वर्ष होगा और बहुत सारी बरकतें लाएगा और यदि नहीं, जैसा कि मैंने कहा, हमारी नव वर्ष की शुभकामनाएँ औपचारिक शुभकामनाएँ हैं। नए साल की शुरुआत की पहली रात को तहज्जुद और फज्र की नमाज़ जमाअत के साथ अदा करना पूरे साल के अच्छे कामों पर हावी नहीं होता है, बल्कि पूरे साल भर इस प्रयास को यथासंभव जारी रखना ही असली नेकी है। अल्लाह हमें इसके लिए सामर्थय दे और वास्तव में, यह साल हमारे व्यक्तिगत जीवन में कई बरकतें लाए और हम जमाअत के असाधारण विकास भी देखें।

(खुत्बा जुमा 4 जनवरी, 2019, अल-फ़ज़ल इंटरनेशनल, 25 जनवरी, 2019)

हमें नये साल की शुरुआत और स्वागत नवाफ़िल और दुआ से करना चाहिए। इस्लाम, अहमदियत के कल्याण और विकास के लिए प्रार्थना करें। प्रार्थनाओं में शहीदों और क़ैदियों तथा उनके परिवारों को याद रखें और दुआ करें कि जहाँ अहमदी मित्रों पर अत्याचारियों का अत्याचार हो रहा है। अल्लाह उनकी आसानी का प्रबंध करे। इसी तरह आज मानवता और मुस्लिम उम्मत भी हमारी प्रार्थनाओं की पात्र हैं। अल्लाह हमें तीसरे विश्व युद्ध की भयावहता से बचाए।

हमारे प्यारे इमाम सैय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह खामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने जमाअत के सभी सदस्यों को प्रत्येक खुत्बा जुमा में कई बार मुस्लिम उम्माह और विशेष रूप से फिलिस्तीन के उत्पीड़ित मुसलमानों और आम जनता के लिए दुआ करने के लिए प्रेरित किया है। हमें यह याद रखना चाहिए। इसलिए इस नए साल की शुरुआत में भी, हमें खलीफा की आवाज़ पर लब्बैक कहते हुए इन उत्पीड़ित लोगों को अपनी प्रार्थनाओं में याद रखना चाहिए। हमें विशेष रूप से कैदियों की सम्मानजनक रिहाई के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

या रब! यही दुआ है हर काम हो बखैर
इकराम लाज़वाल हो इनाम हो बखैर
हर वक़्त आफियत रहे हर गाम हो बखैर
आगाज़ भी बखैर हो, अंजाम हो बखैर

अल्लाह तआला हर साल की तरह इस साल को भी इस्लाम और अहमदियत के लिए रहमतों, बरकतों और असाधारण उन्नतियों से नवाज़े और हमें ईमान और आध्यात्मिकता में बढ़ाता चला जाए। आमीन

★ ★ ★